कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

जनवरी–मार्च, 2025

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

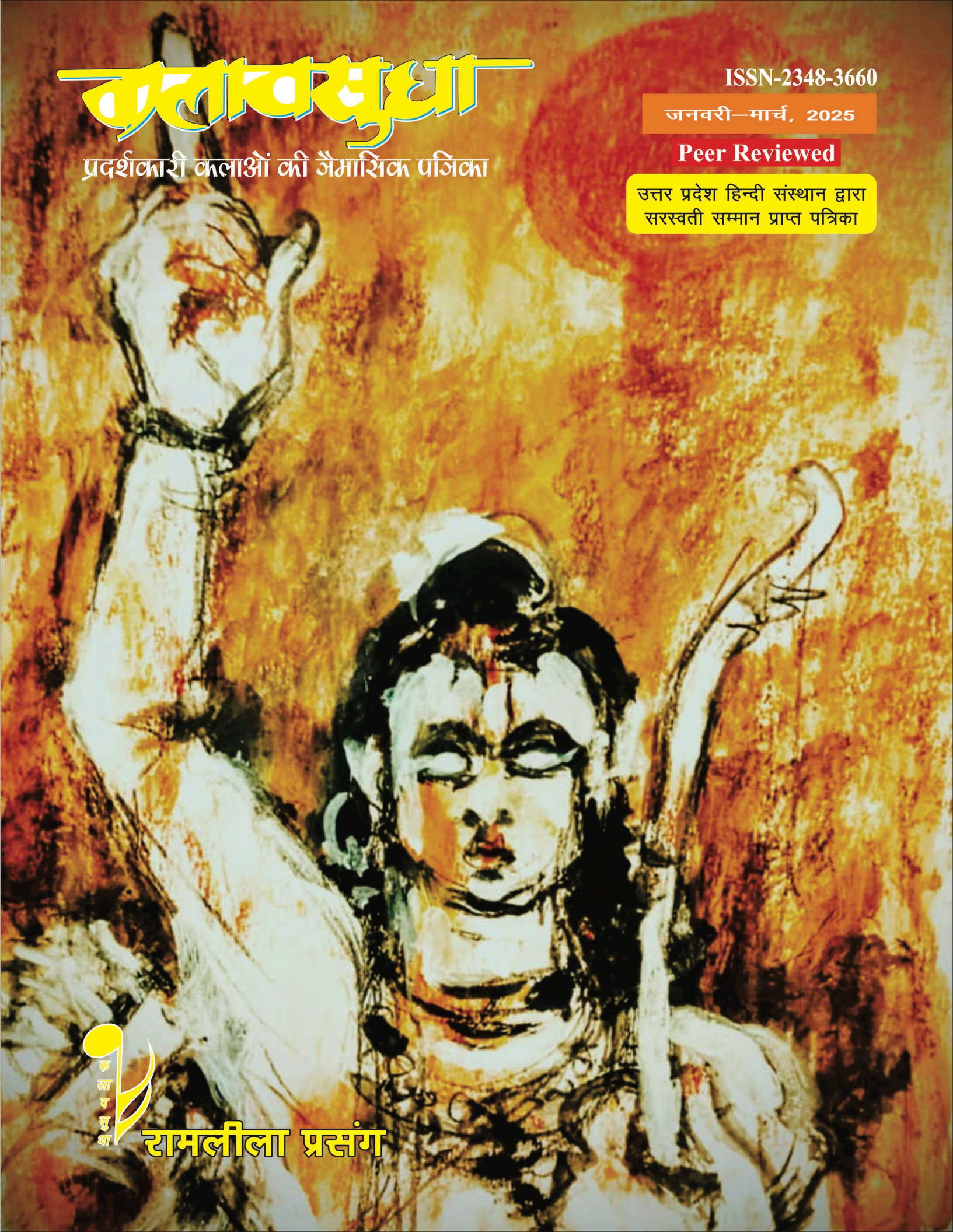

रामलीला प्रसंग

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 25 ■ अंक : 47 ■ जनवरी–मार्च, 2025

ISSN-2348-3660

प्रकाशन स्थापना के 25 वर्ष

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
2. प्रो. ऋचा नागर
3. डॉ. अरविन्द कुमार
4. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
5. भारत रत्न भार्गव
6. डॉ. गौतम चटर्जी
7. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
8. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
9. प्रो. डॉ. सुबाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
10. डॉ. अपूर्वा अवस्थी

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी,
तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com

मो. : **8052557608** (प्रधान संपादक)

मो. : **9889835202** (संपादक)

मो. : **8009800436** (सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 25 ■ अंक : 47 ■ जनवरी–मार्च, 2025

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सिलसिला.....

रामलीला प्रसंग

	कहना–सुनना		4
1.	रामलीला : एक स्मृति उपाख्यान	–डॉ. श्याम सुंदर दुबे	7
2.	लोकनाट्य परंपरा रामलीला	–डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'	11
3.	रामलीला : भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा	–प्रो. (डॉ.) चंद्रशेखर कणसे	16
4.	'तुलसी का मानस और उसका सांस्कृतिक वैशिष्ट्य' '(संगीत के विशेष संदर्भ में)'	–'डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'	20
5.	जैन साहित्य में बलभद्र राम कथानक	–डॉ. पत्रिका जैन, डॉ. आनंद कुमार जैन	26
6.	हिंदी का लोकरंगमंच रामलीला	–वर्षा	30
7.	उत्तरकाण्ड : मानस का उपनिषद	–डॉ. संजय मेहता	32
8.	पहली रामलीला	–डॉ. भानु शंकर मेहता	35
9.	'राम ते अधिक रामकर नामा' बनाम रामलीला दक्षिण–पूर्व एशिया	–डॉ. निशा नाग	37
10.	रामलीला की परम्परा और राधेश्याम कथावाचक	–डॉ. अलका तिवारी	40
11.	जनमानस में रामलीला का नाटकीय विस्तार	–डॉ. ममता धवन	45
12.	लोकनाट्य रामलीला : दिव्यालोचन	–डॉ. अरविन्द कुमार	47
13.	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनकी रामलीला	–हेमन्त शर्मा	49
14.	कथा गायन वाचन का एक उत्कृष्ट उदाहरण : रामलीला	–अजय कुमार	52
15.	लोक–चेतना व आध्यात्मिकता की वाहक रामलीला	–डॉ. बीरेंद्र कुमार 'चन्द्रसखी'	53
16.	औपनिवेशिक काल और श्री रामलीला नाटक मंडली	–डॉ. अलका तिवारी	56
17.	जीवन के आधार हैं श्रीराम और जीवन जीने की कला सिखाती है रामलीला	–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल	57
18.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामलीला की प्रासंगिकता	–डॉ. सुबाष चन्द सिंह 'कुशवाहा'	60
19.	श्रीराम का जीवन दर्शन ...हमारी सांस्कृति विचारधारा	–मनीषा आवले चौगांवकर	65
20.	लोकनाट्य परंपरा रामलीला : विविध आयाम	–रमेश तैलंग	69
21.	बुन्देलखण्ड का लोकनाट्य : रामलीला	–डॉ. चन्द्र पाल	72
22.	रामलीला का वर्तमान स्वरूप और तुलसीदास : काशी के विशेष संदर्भ में	–अंकित दुबे	75
23.	लोक नाट्य परम्परा में रामलीला	–डॉ. जयशंकर	78
24.	भक्ति जगत की एक नाट्य परम्परा : रामलीला	–प्रो. (डॉ.) सुनीता द्विवेदी	85
25.	रामलीला मंचन और भारतीय जनमानस	–डॉ. अर्चना कुशवाहा	88
26.	रामकथा की पावन लोक परम्परा रामलीला	–डॉ. शुभ्रा उपाध्याय	90
27.	वारी लीबा–रामकथा गायन की मणिपुरी परंपरा	–डॉ. मुनीन्द्र मिश्र	94
28.	रामलीला का सामाजिक और धार्मिक प्रदेय	–डॉ. विनय दास	97
29.	महोबा की रामलीला और ईसुरी प्रसाद खरे	–डॉ. वीरेन्द्र 'निर्झर'	99
30.	मिथिला में रामलीला का उत्स व स्वरूप	–प्रो. (डॉ.) लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'	101
31.	रामलीला और आधुनिकता	–शुचिता पाण्डेय	104
32.	रामरसामृत सागर नाटक और हैदरगढ़ की रामलीला	–डॉ. राम बहादुर मिश्र	106
33.	ठौर ठौर की रामलीला	–डॉ. नीतू सिंह	109
34.	सिनेमा पर रामलीला का प्रभाव जब अवसाद के क्षणों में भी नायक गाने लगा	–शशांक दुबे	113
35.	जलधि लांघि गये अचरज नाही : समुद्र पार रामलीला	–अमरेन्द्र सहाय 'अमर'	115
36.	रामलीला और बारहवीं पास राम	–प्रो. डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'	123
37.	दिल्ली : चाँदनी चौक की रामलीला और सवारी की धज	–डॉ. रमा यादव	126
38.	पूर्वोत्तर भारत में रामकथा की लोकनाट्य परम्परा	–कीर्ति दीक्षित	129

39.	जयपुर में मंचित की जाने वाली अनूठी रामलीला (निर्देशक–श्री अशोक राही जी से साक्षात्कार)	–प्रो. (डॉ.) सृष्टि माथुर	133
40.	कन्नौजी रामलीला के विभिन्न रंग	–डॉ. अपूर्वा अवस्थी	135
41.	बुन्देलखण्ड की रामलीलाओं का इतिहास	– राम प्रकाश गुप्ता	137
42.	करनैलगंज गोंडा की रामलीलों सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक संदेश	–जिज्ञासा सिंह	141
43.	गिरिजा सुनहु राम कै लीला	–प्रो. (डॉ.) किरण शर्मा	144
44.	अभिनव रामलीला महोबा की	–रामदत्त तिवारी 'अजेय'	149
45.	बैसवारा की रामलीला	–प्रो. (डॉ.) पुष्पा बरनवाल	150
46.	महोबा की रामलीला के अभिनेता महेश्वरीदीन तिवारी	–संतोष पटेरिया	154
47.	लोक परंपराओं से परिपूर्ण उत्तर प्रदेश की रामलीला	–डॉ. शालिनी साहू	156
48.	रंगीले राजस्थान की मूक रामलीला	–तेजस पूनियां	158
49.	रामलीला, रामायण का दृश्य	–प्रताप जायसवाल	161
50.	कूर्मांचलीय रामलीला	–बृजमोहन जोशी	164
51.	दिल्ली की रामलीला और भारतीय समाज : बदलते समय के साथ अनुकूलन	–पूजा गोस्वामी	167
52.	उत्तराखण्ड़ की रामलीला का विवचनात्मक अध्ययन	–डॉ. निर्मला जोशी, डॉ. किरन चौहान	170
53.	जनपद जालौन में रामलीला नाट्य परंपरा की केवल रसगंध बाकी है	–राजेंद्र कुमार	172
54.	नाट्य बुन्देली रामलीला	–डॉ. रामभजन सिंह	175
55.	रामलीला	–राजेंद्र शर्मा	176
56.	छत्तीसगढ़ में रामलीला	–योग मिश्र	179
57.	ढूँढाड़ में रामजी की लीला राम नाम का यज्ञ 'रामलीला'	–राकेश जैन कोटखावदा	182
58.	रामलीला काशी से कानपुर तक	–कैलाश बाजपेयी	186
59.	रामलीला	–ललित सिंह पोखरिया	188
60.	स्वरलिपियाँ	–आशा श्रीवास्तव	195
61.	प्रेमचन्द की रामलीला	–प्रेमचन्द	197
62.	रामलीला : एक औलिक धरोहर–सांस्कृतिक इतिहास का अद्भुत प्रतिबिंब	–प्रो. (डॉ.) राकेश कुमार	200
63.	पुस्तक समीक्षा : मैनपुरी की लोक सांस्कृतिक विरासत का विहंगावलोकन	–डॉ. अजय प्रजापति	205
64.	Father Kamil Bukle and His Dedication to Lord Rama	–Dr. Jyoti Singh	207
65.	Ramlila	–Avani Pravinbhai Pagar	210
66.	Gender, Myth, and Performance: Analyzing the Representation of Female Characters in Ramleela Rama's Leela	–Dr. Manisha Malhotra	213

प्रतिक्रिया 1. **जिज्ञासा सिंह, 2. डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित,** 3. **कैलाश बाजपेई** 4. **पत्रिका जैन 5. पंकज निगम**

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
प्रतिमा सिंह

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
राहुल
सोनू

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : www.kalavasudha.com ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024/624/00002209
मो. : 9839011924 **से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।**

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

हमारे सुधी सहृदय पाठक गण, सभी को यथा योग्य अभिवादन, कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि, कहत लखन सन राम हृदय गुनि। मानहुं मदन दुंदभीं दीनी, मनसा विश्व विजय कह कीनी।

रामचरित मानस के बालकाण्ड की इस चौपाई में तुलसी दास जी ने पुष्प वाटिका के संदर्भ में जब पहली बार राम सीता जी के कंकण आदि की धुन सुनकर जो प्रथम प्रेम से भरे किन्तु मर्यादित उद्गार कहे हैं यह सिर्फ एक मर्यादा पुरुषोत्तम राम जैसे चरित्र पर ही शोभा देता है। तुलसीदास ने कितनी सफाई से राम चंद्र जी को सीता जी के प्रति अपने उद्गार उक्त पंक्तियों में प्रकट किये हैं। ऐसे ही रामचरित मानस में अनेकों स्थल है जहाँ मर्यादापुरुषोत्तम राम ने अपने स्वभावानुसार ही बात कही है जो शायद सभी के लिये अनुकरणीय है। सीताराम दोनों का स्वभाव ही स्त्री पुरुष सम्बन्ध की मर्यादा की उस कड़ी में बंधा है जो प्रत्येक देश और काल में अनुकरणीय है। यही कारण है कि उनकी लीलायें आज भी सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व के देशों में समय–समय पर खेली जाती है और उनसे प्रेषित संदेश आज भी ग्राह्य माना जाता है। उनका स्वभाव वो पूजा का फूल है जिसे माथे में लगा कर हृदय की ऐसी सुरक्षित जगह रखा जाता है कि वह हर पल, हर क्षण हमारे मन बुद्धि और कर्म को शुचिता प्रदान करता रहे।

कहा जाता है जब राम चौदह बरस के लिये बनवास चले गये तो उनका चरित्र उनकी याद में अयोध्या वासी पीछे से खेलते थे। महर्षि बाल्मीकि ने तो राम के दोनों पुत्र लव और कुश को भी अपने द्वारा रचित रामायण याद करवा कर अयोध्या और राम के समक्ष गायन का उन्मेष किया। यही सब वियोग से उपजे पल ही रामलीला के मूल में निहित है।

16वीं शदी में तो तुलसीदास ने विस्तार किया जो दक्षिण ऐशिया ही नहीं पूरे विश्व में फैला। बाल्मीकी रामायण में लवकुश (कुशीलव) संगीत मय गीत नाट्य के रूप में रामायण का सुन्दर अभिनय के साथ गान प्रस्तुत करते थे। काशी के चौका घाट में तुलसीदास के शिष्य मेघा भगत ने उनकी स्मृति में रामलीला आरम्भ की। वही कीर्तनिया नाच, तथा भक्ति आन्दोलन और पौराणिक कथाओं का मंचन होता था। मिथिला में राम खेलिया और जानकी रामायण का प्रचार है। वहाँ रामलीला में विदूषक भी होता है जिसे 'विपदा' कहते हैं।

यह कथा किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय की नहीं है। विदेश में बसने वाले अनेकों भारतीयों के हृदय में पूजा के फूल की तरह बसते हैं। फीजी, मारिशस, लाओस, तिब्बत, जापान, मंगोलिया नेपाल, म्यामार, श्रीलंका, कम्बोडिया, सूरीनाम इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया और योरोप जैसे पश्चिमी देशों तक इसका विस्तार है। लगभग 5 लहरे आई 1. अमरावती (दूसरी शताब्दी) 2. गुप्त युग (चौथी छठी शताब्दी) 3. पल्लव (लगभग 500 ई. 750 ई.) पाल (750–900 ई. तक) और अंत में नालंदा विश्वविद्यालय के नष्ट हो जाने और बौद्ध संघों के सदस्यों के विदेश में फैल जाने के फलस्वरूप एक लहर 12–13 शताब्दी में भी आई। इन सब के दूरगामी प्रभाव पड़ा।

कहा जाता है कि बहादुर शाह जफर ने 1830 ई. में रामलीला का आयोजन और रामलीला की सवारी की अवधारणा अपने समय में रखी। यह लगभग 190 साल पुरानी परम्परा है। उत्तराखण्ड की रामलीला आज भी पूरे साल के साथ मैदानी इलाकों में भी की जा रही है। रुद्र प्रयाग में महिलायें रामलीला खेलती हैं। यह देश की पहली रामलीला है जो महिलाओं द्वारा खेली जाती है।

अपने देश में लगभग 100 प्रकार की रामलीला होती है और लगभग यह विधा लगभग 75 देशों की यात्रा भी कर चुकी है। रामलीला की बात हो तो रूहेलखण्ड की रामलीला भी अद्भुत है जिसके सम्वाद राधेश्याम रामायण से बोले जाते हैं।

बनारस की रामनगर की रामलीला का स्थान अद्वितीय है जो एक स्थान पर नहीं खेली जाती कई स्थानों पर मंच बनाकर खेलते हैं। मथुरा वृन्दावन में वहाँ के चौबे लोग मण्डली बनाकर रामलीला एक ही मंच पर खेलते हैं जो बेहद आकर्षक होती है। उसमें ब्रज भाषा और ब्रज के संगीत दोनों का प्रभाव होता है। मैं यह बचपन से देखती हुई बड़ी हुई। उसमें विदूषक को मक्खीचूस कहते हैं।

कहीं–कहीं अवध के गाँवों में रामलीला की मण्डली आती हैं और गाँव के समृद्ध लोग धन, अनाज, सामान, मिठाई, कपड़ा आदि उनको बारी–बारी से रोज भेजते हैं। उसी से उनका खर्च चलता है।

किसी–किसी गाँव के लोग ही खुद इकट्ठा होकर रामलीला का पूरा बानक स्वयं तैयार कर मंच पर खेलते हैं और खर्च सभी गाँव वालों के चंदे से पूरा होता है। रामलीला होनी चाहिए चाहे वह मण्डली बनाकर हो या गाँव के लोगों के द्वारा। चाहे एक मंच पर या एक ही नगर के कई मंचों पर अलग–अलग प्रसंग खेले जाये। यही विविधता इसकी विशेषता है। रामलीला के अतिरिक्त परसुराम सम्वाद भी रामलीला की एक कड़ी होकर भी स्वतंत्र रूप से खेला जाता है। बड़े ही जोश के साथ सीता स्वयंवर का यह दृश्य मनाया जाता है।

'रामलीला' मूलतः रामचरित्र मानस की कथा को ही प्रस्तुत करती है। इसके मंचन में दृश्य सज्जा का भी महत्व है। इसके मंचन में दृश्य सज्जा का भी महत्व है। कथा तथा स्थान के आधार पर मंच तैयार होता है। आज आधुनिक तकनीक के प्रयोग के एल ई डी स्क्रीन पर बड़े–बड़े दृश्य पार्श्व में दिखाई देते हैं। किन्तु आज इनका महत्व बढ़ गया है। पात्र उनके सामने गौड़ दिखने लगे हैं। साथ ही फिल्मी गीतों और उनकी पैरोडियों का समावेश होने लगता है। रामायण पर लाइट और साउण्ड की नाटकीयता में वह फिल्मी होती जा रही है। उसकी आध्यात्मिक भव्यता खत्म होती जा रही है।

रामायण के अनेकों नाम और उनके आधार पर होने वाली लीलायें है यहाँ संक्षेप में कुछ प्रसिद्ध रामायणों का विवरण भी इस प्रकार है–राम केति (कम्बोडिया), राम कियेन (थाइलैण्ड) रामवस्तु (वर्मा), आर्ष रामायण,